जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है !

शुध्द चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किये जातें है!

(पांडुशिला, सिंघासन ,छत्र ,चंवर प्रातिहार्य , जापमाला , मंगल कलश,पूजा बर्तन चंदोवा,तोरण,झारी)

नोट :- हमारे यहाँ घरो मे उपयोग हेतु , साधुओं के उपयोग हेतु, अनुष्ठानो मे उपयोग हेतु शुध्द देशी घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है !

Contact:-
Sourabh Sagar Indore
9993602663
7722983010
sourabhjn1989@gmail.com

जैन

जय जिनेन्द्र

गाय का शुद्ध देशी घी

शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी

साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानो को ध्यान में
रख कर बनाया गया शुद्ध देशी घी

घी ऐसा के दिल जीत जाये !

अब 1kg की पैकिंग में भी उपलब्ध

संपर्क सूत्र

Contact For Order

Sourabh Sagar Indore

Call & Whatsapp:

9993602663,7722983010

All India Home Delivery

शनि अरिष्ट ग्रह निवारक
श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

मुनिसुव्रत विधान का मण्डल

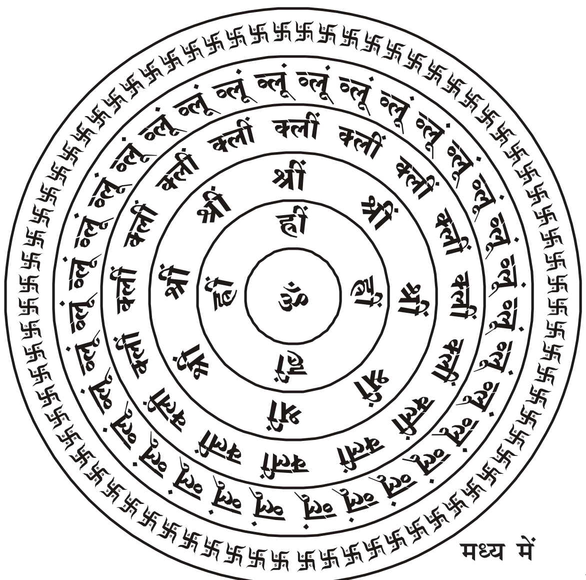

मध्य में	-	ॐ
प्रथम वलय में	-	4
द्वितीय वलय में	-	8
तृतीय वलय में	-	16
चतुर्थ वलय में	-	32
पंचम वलय में	-	64

aM{`Vm :

परम पूज्य क्षमामूर्ति, साहित्य रत्नाकर

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति - शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

कृतिकार - परम पूज्य साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - पंचम् -2012

प्रतियाँ : 1000 प्रति

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज, ब्र. लालजी भैया, ब्र. सुखनन्दनजी

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन - किरण दीदी, आरती दीदी, उमा दीदी ● मो. 9829127533

प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.)-07581-274244

3. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए-107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566

अक्षय पुण्यकर्त्ता

श्री प्रबन्धकारिणी कमेटी, जैन बिरादरी, मेरठ
एवं सकल जैन समाज, मेरठ (उत्तरप्रदेश)

_wDH$: amOy J«m{\$H$ AmQ>©, जयपुर ● फोन : 2363339, मो: 9829050791

Email : rajugraphicart@gmail.com, shahsundeep@rocketmail.com

आत्मीय निवेदन

कर्त्तव्यमेव कर्त्तव्यं, प्राणैः कण्ठ गतैरऽपि ।
अकर्त्तव्यं नैव कर्त्तव्यं, प्राणैः कण्ठ गतैरऽपिङ्क

आज इंसान अपने कर्त्तव्यों से क्या अपने आप से भी विमुख हो रहा है। उसे ये भी नहीं पता मैं कौन हूँ, मेरा स्वरूप क्या है और मुझे क्या करना है ? कर्त्तव्यों की ओर उन्मुख होने के लिये स्वयं की खोज करना आवश्यक होता है। मैं श्रावक हूँ इसके लिए आचार्यों ने श्रावक के 6 आवश्यक कर्त्तव्य बताए हैं।

देवपूजा गुरुपास्ति स्वाध्याय संयम तपः
दानं चेति गृहस्थानां षट् कर्माणि दिने-दिनेङ्क

हमारे पूर्व आचार्यों ने कहा जब तक कण्ठ में प्राण रहे तब तक कर्तव्य करते रहना चाहिए और अकर्तव्य जब तक प्राण न रहे तब तक नहीं करना चाहिए। देवपूजा एक ऐसा कर्तव्य है जिसमें सभी कर्तव्य समाहित हो जाते हैं। जो जिनेन्द्र भगवान की अष्ट द्रव्य से पूजन करता है वह अपार पुण्य का संचय करता है। पूजन भी 5 प्रकार की होती है **नित्यपूजा**- मंदिर में आम्नाय के अनुसार जिनेन्द्र भगवान की पूजन प्रत्येक दिन पूजा करना। **चतुर्मुख पूजन** -मुकुटबद्ध आदि राजाओं के द्वारा सुसज्जित चतुर्मुखी मण्डप में जो महापूजा होती है। **कल्पद्रुम पूजा**-जिसमें किमिच्छिक दान दिया जाता है। **अष्टाह्निकी पूजा**-अष्टाह्निका पर्वो में इन्द्रों के द्वारा नंदीश्वर द्वीप में 8 दिन तक जो पूजा की जाती है। **इन्द्रध्वज पूजा**- अकृत्रिम चैत्यालयों में अथवा पंचकल्याणकों में देवों द्वारा जो पूजा की जाती है।

पूजन विधान तो सभी एक से ही होते हैं किन्तु भक्त के भक्ति करने के तरीके अलग-अलग होते हैं। शांति के लिए शांतिनाथ विधान, कष्टों को दूर करने के लिए पारसनाथ विधान, नवग्रहों की शांति के लिए नवग्रह विधान इत्यादि करवाते हैं। इसी क्रम में **परम पूज्य क्षमामूर्ति आ. श्री. 18 विशद सागर जी महाराज** ने श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान भी तैयार किया है। यह सर्वप्रथम विधान है इसके लिए किसी ने अभी तक नहीं किया। इसमें हैं पाँच वलय और 124 अर्घ्य हैं। इस विधान के स्वर, शब्द, छंद बहुत ही सरल शैली में लिखे हैं जो एक बार पूजन करता है बार-बार उसको पूजन करने की भावना होती है। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है अधिक से अधिक लोग पूजन विधान करके मुक्ति पथ की ओर अपना कदम बढ़ायेगें। अंत में गुरु चरणों में नवकोटि पूर्वक नमोस्तु।

- ब्र. आस्था दीदी

शनि ग्रह अरिष्ट निवारक विधान

जन्म राशि व जन्म राशि से दूसरे बारहवें स्थान में स्थित शनि को साढ़े साती कहते हैं। शनि एक राशि पर ढाई वर्ष रहता है इस प्रकार तीन राशियों में भ्रमण काल में साढ़े सात वर्ष पूरे होते हैं।

साढ़े साती शनि किसी को प्रारम्भ में किसी को मध्य में और किसी को अन्त में अशुभ फल दिया करता है। जन्मपत्री में चन्द्रमा तथा शनि 2.6.8.12 स्थानों में हो व बीच राशि के पाप ग्रहों के साथ हो या अस्तगत या पाप युक्त होकर 8/12 स्थान में पड़े हों तो शनि की साढ़े साती अशुभफल करेगी।

जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या वारमेश भी हो तो ढैया और साढ़े साती विशेष अनिष्ट फल कारक होती है।

शनि की इस प्रकार अनिष्ट अवस्था से उत्पन्न परेशानियों से बचने के लिए जिन भक्ति सरल साधन है। श्री मुनिसुव्रत भगवान की पूजा एवं जाप अनुष्ठान करके इस विधान का विधिपूर्वक आयोजन करने से समस्त विपत्तियां समाप्त हो जाती हैं।

भगवान की भक्ति, पूजा, विधान एवं जाप आदि से भावों की विशुद्धि होती है जिससे ग्रह दुष्प्रभाव कार्य नहीं कर पाता एवं अशुभ कर्म भी आकर्षित होकर सूक्ष्म फल देकर झड़ जाता है।

आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज ने अपनी विशुद्ध भावना से इस विधान की रचना की है जो विधान कारक के मन की विशुद्धि में कारण है।

महाराज जी की तपो साधना से प्रसूत यह विधान ग्रह दोष से मुक्त करने का प्रबल निमित्त है। शनि ग्रह से दूषित व्यक्ति को अपने जन्म नक्षत्र में ही इस विधान को भावना पूर्वक मण्डल बनाकर अभिषेक शान्ति धारा मंगल कलश एवं दीपक स्थापना पूर्वक करना चाहिए। विधान के जाप मंत्र का जाप अवश्य करें क्योंकि जाप के माध्यम से दोष निवारण अतिशीघ्र होता है।

ग्रह अपना दोष तो दिखाता ही है किन्तु व्यक्ति धर्म कार्यों, पूजा विधान एवं मंत्र जाप में लगा रहता है तो वह ग्रह दु:खी नहीं कर पाता है। अत: मन को अन्यत्र भटकने से बचाकर भगवत भक्ति में ही मन को लगाना चाहिए।

जिन्होंने अष्ट कर्मों को नष्ट कर दिया है उनकी भक्ति से जब मोक्ष सुख प्राप्त हो सकता है। तो फिर यह ग्रह आदि के दोष तो सहज ही दूर हो जाते हैं। ऐसा विश्वास (श्रद्धा) पूर्वक इस विधान को पूर्ण भक्ति से करके शनि ग्रह दोष का निवारण कर अपना जीवन सुखी बनावें।

पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन
रजवांस

विनय पाठ

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्।।
दुःखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर–नर–किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।
निर्मल भावों से प्रभु, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार।।
करके तव पद अर्चना, विघन रोग हों नाश।
जन–जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभु ! करते स्वयं समान।।

अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव।
जब तक मम जीवन रहें, ध्याऊँ तुम्हें सदैव।।
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ति धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते विशद प्रणाम।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धि सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।।1 ।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।1 ।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ।।2 ।।
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलम् मतः ।।3 ।।
एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ।।4 ।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ।।5 ।।
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ।।6 ।।
विघ्नौघाः प्रलयम् यान्ति शाकिनी-भूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।।7 ।।

(यहां पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

(यदि अवकाश हो तो यहां पर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ावें।)

पंचकल्याणकअर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्वार्थसूत्रदशाध्याय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसङ्घ-सुदृशां-सुकृतैकहेतु-जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि।।
स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृङ् मयाय, स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय; स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं; भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्; भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।

अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नौ; पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।
ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री वृषभो नः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमानः।

(पुष्पांजलि क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।2।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादना-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।3।।
प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।4।।
जङ्घावलि-श्रेणि -फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।5।।

अणिम्नि दक्षाःकुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।6।।
सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतिघातगुण प्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।7।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।8।।
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्लमल्लौषधीशाः,स्वस्तिक्रियासुपरमर्षयो नः।।9।।
क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवास महानसाश्चं स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।10।।

(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्) (इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)

श्री पंच परमेष्ठी पूजन

अर्हन्तों के वंदन से, उर में निर्मलता आती है।
श्री सिद्ध प्रभु के चरणों में, सारी जगती झुक जाती है॥
आचार्य श्री जग जीवों को, शुभ पञ्चाचार प्रदान करें।
उपाध्याय करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान का दान करें॥
हैं साधु रत्नत्रय धारी, उनके चरणों शत्-शत् वंदन।
हे पञ्च महाप्रभु! विशद हृदय में, करता हूँ मैं आह्वानन्॥
हे करुणानिधि! करुणा करके, मेरे अन्तर में आ जाओ।
मैं हूँ अधीर तुम धीर प्रभो! मुझको भी धीर बँधा जाओ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

निर्मल सरिता का प्रासुक जल, मैं शुद्ध भाव से लाया हूँ।
हो जन्म जरादि नाश प्रभु, तव चरण शरण में आया हूँङ्क
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक, अरु सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँङ्क 1ङ्क

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो जन्म-जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलता पाने को पावन, चंदन घिसकर के लाया हूँ।
भव सन्ताप नशाने हेतु, चरण शरण में आया हूँङ्क
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक, अरु सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हो पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँङ्क 2ङ्क

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वच्छ अखंडित उज्ज्वल तंदुल, श्री चरणों में लाया हूँ।
अनुपम अक्षय पद पाने को, मैं चरण शरण में आया हूँङ्क
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक, अरु सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँङ्क 3ङ्क

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निज भावों के पुष्प मनोहर, परम सुगंधित लाया हूँ।
काम शत्रु के नाश हेतु प्रभु, चरण शरण में आया हूँङ्क
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँङ्क 4ङ्क

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो कामवाण विध्वशंनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

परम शुद्ध नैवेद्य मनोहर, आज बनाकर लाया हूँ।
क्षुधा रोग का मूल नशाने, चरण शरण में आया हूँङ्क।

अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँङ्क 5ङ्क

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतर दीप प्रज्ज्वलित करने, मणिमय दीपक लाया हूँ।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, चरण शरण में आया हूँङ्क
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँङ्क 6ङ्क

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीतिस्वाहा।

दश धर्मों की प्राप्ति हेतु मैं धूप दशांगी लाया हूँ।
अष्ट कर्म का नाश होय मम्, चरण शरण में आया हूँङ्क
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँङ्क 7ङ्क

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस nŠd निर्मल फल उत्तम, तव चरणों में लाया हूँ।
परम मोक्ष फल शिव सुख पाने, चरण शरण में आया हूँङ्क
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँङ्क 8ङ्क

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य मनोहर लाया हूँ।
निज अनर्घ पद पाने हेतु, चरण शरण में आया हूँङ्क
अर्हंत सिद्ध सूरि पाठक अरु, सर्व साधु को ध्याता हूँ।
हों पञ्च परम पद प्राप्त मुझे, मैं सादर शीष झुकाता हूँङ्क 9ङ्क

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिन परमेष्ठी पाँच की, महिमा अपरम्पार।
गाते हैं जयमालिका, करके जय-जयकारङ्क

समुच्चय जयमाला

जय जिनवर केवलज्ञान धार, सर्वज्ञ प्रभु को करूँ नमन्।
जय दोष अठारह रहित देव, अर्हन्तों के पद में वंदनङ्क
जय नित्य निरंजन अविकारी, अविचल अविनाशी निराधार।
जय शुद्ध बुद्ध चैतन्यरूप, श्री सिद्ध प्रभु को नमस्कारङ्क
जय छत्तिस गुण को हृदयधार, जय मोक्षमार्ग में करें गमन्।
जय शिक्षा दीक्षा के दाता, आचार्य गुरु को करूँ नमनङ्क
जय पच्चीस गुणधारी गुरुवर, जय रत्नत्रय को हृदय धार।
जय द्वादशांग पाठी महान्, श्री उपाध्याय को नमस्कारङ्क
जय मुनि संघ आरम्भहीन, जय तीर्थंकर के लघुनंदन।
जय ज्ञान ध्यान वैराग्यवान, श्री सर्वसाधु को करूँ नमन्ङ्क
जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो! श्री जिनवाणी जग में मंगल।
जय गुरु पूर्ण निर्ग्रन्थ रूप, जो हरते हैं सारा कलमलङ्क
इनका वंदन मैं करूँ नित्य, हो जाए सफल मेरा जीवन।
मैं भाव सुमन लेकर आया, चरणों में करने को अर्चनङ्क
प्रभु भटक रहा हूँ सदियों से, मिल सकी न मुझको चरण शरण।
अत एव अनादि से भगवन्, पाए मैंने कई जनम-मरणङ्क
अब जागा मम् सौभाग्य प्रभु, तुमको मैंने पहिचान लिया।
सच्चे स्वरूप का दर्शन कर, जो समीचीन श्रद्धान कियाङ्क
है अर्ज हमारी चरणों में प्रभु, हमको यह वरदान मिले।
मैं रहूँ चरण का दास बना, जब तक मेरी यह श्वांस चलेङ्क
तुम पूज्य पुजारी चरणों में, यह द्रव्य संजोकर लाया है।
हो भाव समाधि मरण अहा!, यह विनती करने आया हैङ्क
क्योंकि दर्शन करके हमने, सच्चे पद को पहिचान लिया।
हम पायेंगे उस पदवी को, अपने मन में यह ठान लियाङ्क

अनुक्रम से सिद्ध दशा पाना, अन्तिम यह लक्ष्य हमारा है।
उस पद को पाने का केवल, जिनभक्ति एक सहारा हैङ्क
जिनभक्ति कर जिन बनने की, मेरे मन में शुभ लगन रहे।
जब तक मुक्ति न मिल पाए, शुभ 'विशद' धर्म की धार बहे।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - परमेष्ठी का दर्श कर, हृदय जगे श्रद्धान।
पूजा अर्चा से बने, जीवन सुखद महानङ्क

इत्यादि आशीर्वादः (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवनम्

वैतालीय छन्द

अधिगत-मुनि-सुव्रत-स्थितिर्- मुनि-वृषभो मुनिसुव्रतोऽनघः।
मुनिपरिषदि निर्बभौ भवा-नुडु-परिषत्परिवीत-सोमवत् ङ्क1ङ्क

परिणत-शिखि-कण्ठ-रागया, कृत-मद-निग्रह-विग्रहाऽऽभया।
तव जिन ! तपसः प्रसूतया, ग्रह-परिवेष-रुचेव शोभितम् ङ्क2ङ्क

शशि-रुचि-शुचि-शुक्ल-लोहितं, सुरभितरं विरजो निजं वपुः।
तव शिवमऽति विस्मयं यते ! यदपि च वाङ्मनसीय मीहितम् ङ्क3ङ्क

स्थिति-जनन-निरोध-लक्षणं, चरमचरं च जगत् प्रतिक्षणम्।
इति जिन ! सकलज्ञ-लाञ्छनं, वचन मिदं वदतांवरस्य ते ङ्क4ङ्क

दुरित-मल-कलंकमष्टकं, निरुपम-योगबलेन निर्दहन्।
अभव-द्भव-सौख्यवान् भवान्, भवतु ममाऽपि भवोपशान्तये ङ्क5ङ्क

श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः

श्री मुनिसुव्रत जिन स्तोत्र

दोहा– भूमण्डल के ज्योति प्रभु, तीन लोक के नाथ।
वन्दन कर जिनदेव के, चरण झुकाऊँ माथ॥

हे नाथ ! आपने जग बन्धन, तजकर के व्रत को धार लिया।
जो पथ पाया था सिद्धों ने, उसको तुमने स्वीकार किया।
यह तीन लोक में पावन पथ, इसके हम राही बन जावें।
हम शीष झुकाते चरणों में, प्रभु सिद्धों की पदवी पावेंङ्क

शुभ तीर्थंकर सम पुण्य पदक, यह पूर्व पुण्य से पाये हैं।
सब कर्म घातिया नाश किए, अरु केवल ज्ञान जगाये हैं।
शुभ ज्ञान की महिमा अनुपम है, यह द्रव्य चराचर ज्ञाता हैं।
इस ज्ञान को पाने वाला तो, निश्चय मुक्ति को पाता हैङ्क

जिनको यह ज्ञान प्रकट होता, वह अर्हत् पद के धारी हों।
वह सर्व लोक में पूज्य रहे, अरु स्व पर के उपकारी हों।
वह दिव्य देशना के द्वारा, जग जीवों का कल्याण करें।
करते सद् ज्ञान प्रकाश अहा, भवि जीवों का अज्ञान हरेंङ्क

यह प्रभु का पद ऐसा पद है, जग में कोई और समान नहीं।
हम तीन लोक में खोज लिए, पर पाया नहीं है और कहीं।
उस पद का मन में भाव जगा, जिसको तुमने प्रभु पाया है।
यह भक्त जगत की माया तज, प्रभु आप शरण में आया हैङ्क

ये जग दुक्खों से पूरित है, सुख शांति का है लेश नहीं।
तीनों लोकों में भटक लिया, पर सुख पाया है नहीं कहीं।
हम सुख अतिन्द्रिय पाने को, प्रभु तब चरणों में आए हैं।
हम भक्ति भाव से शीष झुकाकर, प्रभु चरणों सिर नाए हैंङ्क

श्री मुनिसुव्रत जिन पूजन विधान

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दनङ्क
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वानन्ङ्क
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करोङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं॥

है अनादि की मिथ्या भ्रांति, समकित जल से नाश करूँ।
नीर सु निर्मल से पूजा कर, मृत्यु आदि विनाश करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क1ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

द्रव्य भाव नो कर्मों का मैं, रत्नत्रय से नाश करूँ।
शीतल चंदन से पूजा कर, भव आताप विनाश करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क2ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अविनश्वर पद पाने, निज स्वभाव का भान करूँ।
अक्षय अक्षत से पूजा कर, आतम का उत्थान करूँङ्क

शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क3ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

संयम तप की शक्ति पाकर, निर्मल आत्म प्रकाश करूँ।
पुष्प सुगधित से पूजा कर, कामबली का नाश करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क4ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पंचाचार का पालन करके, शिवनगरी में वास करूँ।
सुरभित चरु से पूजा करके, क्षुधा रोग का ह्रास करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क5ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पुण्य पाप आस्त्रव विनाश कर, केवल ज्ञान प्रकाश करूँ।
दिव्य दीप से पूजा करके, मोह महातम नाश करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क6ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अष्ट गुणों की सिद्धि करके, अष्टम भू पर वास करूँ।
धूप सुगन्धित से पूजा कर, अष्ट कर्म का नाश करूँङ्क

शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क7ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

मोक्ष महाफल पाकर भगवन्, आतम धर्म प्रकाश करूँ।
विविध फलों से पूजा करके, मोक्ष महल में वास करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क8ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

भेद ज्ञान का सूर्य उदय कर, अविनाशी पद प्राप्त करूँ।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उर अनर्घ पद व्याप्त करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीष झुकाए हैंङ्क9ङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच कल्याणक के अर्घ्य

श्रावण कृष्णा दोज सुजान, देव मनाए गर्भ कल्याण।
पद्मा माता के उर आन, राजगृही नगरी सु महान्ङ्क1ङ्क

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भमंगल मण्डिताय शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दशें कृष्ण वैशाख सुजान, सुर नर किए जन्म कल्याण।
नृप सुमित्र के घर में आन, सबको दिए किमिच्छित दानङ्क2ङ्क

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्ममंगल मण्डिताय शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कृष्ण दशम वैशाख महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
चंपक तरु तल पहुँचे नाथ, मुनि बनकर प्रभु हुए सनाथङ्क3ङ्क

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपोमंगल मण्डिताय शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नवमी कृष्ण वैशाख महान्, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।
सुरनर करते प्रभु गुणगान, मंगलकारी और महान्ङ्क4ङ्क

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानमंगल मण्डिताय शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण द्वादशी महान्, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
मोक्ष पधारे श्री भगवान, नित्य निरंजन हुए महान्ङ्क5ङ्क

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षमंगल मण्डिताय शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **मुनिसुव्रत मुनिव्रत धरूँ, त्याग करूँ जगजाल।**
शनि अरिष्ट ग्रह शांत हो, करता हूँ जयमालङ्क

पद्धरि छंद

जय मुनिसुव्रत जिनवर महान्, जय किए कर्म की प्रभु हान।
जय मोह महामद दलन वीर, दुर्द्धर तप संयम धरण धीरङ्क
जय हो अनंत आनन्द कंद, जय रहित सर्व जग दंद फंद।
अघ हरन करन मन हरणहार, सुखकरण हरण भवदुःख अपारङ्क
जय नृप सुमित्र के पुत्र नाथ, पद झुका रहे सुर नर सुमाथ।
जय पद्मावति के गर्भ आय, सावन वदि दुतिया हर्ष दायङ्क
जय-जय राजगृही जन्म लीन, वैशाख कृष्ण दशमी प्रवीण।
जय जन्म से पाए तीन ज्ञान, जय अतिशय भी पाये महान्ङ्क

तन सहस आठ लक्षण सुपाय, प्रभु जन्म लिए जग के हिताय।
सौधर्म इन्द्र को हुआ भान, राजगृह नगरी कर प्रयाणङ्क
जाके सुमेरु अभिषेक कीन, चरणों में नत हो ढोक दीन।
वैशाख कृष्ण दशमी सुजान, मन में जागा वैराग्य भानङ्क
कई वर्ष राज्य कर चले नाथ, इक सहस सु नृप भी चले साथ।
शुभ अशुभ राग की आग त्याग, हो गए स्वयं प्रभु वीतरागङ्क
नित आतम में हो गए लीन, चारित्र मोह प्रभु किए क्षीण।
प्रभु ध्यानी का हो क्षीण राग, वह भी हो जाए वीतरागङ्क
तीर्थंकर पहले बने संत, सबने अपनाया यही पंथ।
जिनधर्म का है वश यही सार, प्रभु वीतराग को नमस्कारङ्क
वैशाख वदी नौमी सुजान, प्रभु ने पाया कैवल्य ज्ञान।
सुर समवशरण रचना बनाय, सुर नर पशु सब उपदेश पायङ्क
जय-जय छियालिस गुण सहित देव, शत् इन्द्र भक्ति वश करें सेव।
जय फाल्गुन बदि द्वादशी नाथ, प्रभु मुक्ति वधु को किए साथङ्क
मुनिसुव्रत स्वामी, अन्तर्यामी, सर्व जहाँ में सुखकारी।
जय भव भय हारी आनंदकारी, रवि सुत ग्रह पीड़ा हारीङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(छन्द घत्तानन्द)

दोहा– **मुनिसुव्रत के चरण का, बना रहूँ मैं दास।**
भाव सहित वन्दन करूँ, होवे मोक्ष निवास ।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

प्रथम वलय

दोहा– **मुनिसुव्रत के चरण में, चढ़ा रहे हम अर्घ्य।**
चउ संज्ञाएँ नाश हों, पाऊँ सुपद अनर्घङ्क

मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती मां के नन्दनङ्क
मुनिव्रत धारी हे ! भवतारी, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वाननङ्क

हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करोङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं॥

4 संज्ञा विनाशक श्री जिन के अर्घ्य

मुनिव्रतों को जिसने धारा, बने कर्म आ करके दास।
तीर्थंकर पद पाया प्रभु ने, भोजन संज्ञा हुई विनाशङ्क
रहे निवारक शनि अरिष्ट के, मुनिसुव्रत है जिनका नाम।
भक्ति-भाव से चरण कमल में, करते बारम्बार प्रणामङ्क १ङ्क

ॐ ह्रीं आहार संज्ञा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रहनिवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि:स्वाहा॥

निर्भय होकर बीहड़ वन में, निज आतम में कीन्हा वास।
सप्त महामय भारी जग में, क्षण में उनका किया विनाशङ्क
रहे निवारक शनि अरिष्ट के, मुनिसुव्रत है जिनका नाम।
भक्ति-भाव से चरण कमल में, करते बारम्बार प्रणामङ्क २ङ्क

ॐ ह्रीं भय संज्ञा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥

कामबली ने मोह पास में, सारे जग को बाँध लिया।
ब्रह्मभाव से मैथुन संज्ञा, को प्रभु ने निर्मूल कियाङ्क
रहे निवारक शनि अरिष्ट के, मुनिसुव्रत है जिनका नाम।
भक्ति-भाव से चरण कमल में, करते बारम्बार प्रणामङ्क ३ङ्क

ॐ ह्रीं मैथुन संज्ञा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥

बाह्याभ्यन्तर कहा परिग्रह, उसके होते चौबिस भेद।
परिग्रह की संज्ञा के नाशी, नाश किया है जिसने खेदङ्क
रहे निवारक शनि अरिष्ट के, मुनिसुव्रत है जिनका नाम।
भक्ति-भाव से चरण कमल में, करते बारम्बार प्रणामङ्क ४ङ्क

ॐ ह्रीं परिग्रह संज्ञा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा- **मुनिसुव्रत भगवान ने, संज्ञाएँ की नाश।**
आत्म ध्यान से कर दिये, घातीकर्म विनाशङ्क

ॐ ह्रीं चतु: संज्ञा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

द्वितीय वलय

दोहा - **अष्टकर्म ने जीव को, जग में दिया क्लेश।**
पुष्पांजलि करता विशद, नाशूँ कर्म अशेषङ्क

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती मां के नन्दनङ्क
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वाननङ्क

हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करोङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं॥

अष्ट कर्म विनाशक श्री जिन के अर्घ्य

जो ज्ञान सुगुण को ढक लेता, वह ज्ञानावरणी कर्म कहा।
इस कारण जीव अनादि से, भवसागर में ही भटक रहाङ्क
हो ज्ञानावरणी कर्म शमन, प्रभु शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँङ्क

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 1॥

जो दर्शन गुण का घात करे, वह दर्शन आवरणी जानो।
यह कर्म महा दुखदायी है, इसको भी तुम कम न मानोङ्क
मैं नाश हेतु इस शत्रु के, प्रभु शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँङ्क

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 2॥

सुख दु:ख के वेदन का कारण, यह कर्म वेदनीय होता है।
सुख में तो हँसता है लेकिन, दु:ख आने पर नर रोता हैङ्क
मैं कर्म वेदनीय शमन हेतु, प्रभु शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँङ्क

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा॥ 3॥

यह मोह महा बलशाली है, इसने दो रूप बनाए हैं
दर्शन चारित्र दोनों गुण में, यह अपनी रोक लगाए हैं।
मैं मोह कर्म के नाश हेतु, प्रभु शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँङ्क

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 4॥

है बन्धन आयु कर्म महा, चारों गतियों में कैद करे।
वह उठा पटक करता रहता, प्राणी की शक्ति पूर्ण हरेङ्क
मैं कर्म आयु के नाश हेतु, प्रभु शरण आपकी आया हूँङ्क
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँङ्क

ॐ ह्रीं आयुकर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 5॥

है शिल्पकार सम नाम कर्म, जो नाना रूप बनाता है।
ज्यों खेल खिलौना पाने को, बालक का मन ललचाता हैङ्क
मैं नामकर्म का नाश करूँ, प्रभु शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँङ्क

ॐ ह्रीं नामकर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 6॥

जो ऊँच नीच का कारण है, जग में कटुता का काम करे।
जो अरति ईर्ष्या का कारण, जीवों को कष्ट प्रदान करेङ्क
मैं गोत्रकर्म का नाश करूँ, प्रभु शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँङ्क

ॐ ह्रीं गोत्रकर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 7॥

जो कदम-कदम पर विघ्न करे, वह अन्तराय दुःखदाई है।
शान्ति को क्षीण करे प्रतिपल, यह कर्म की ही प्रभुताई हैङ्क
हो अन्तराय का नाश प्रभो! मैं शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँङ्क

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 8॥

दोहा - **अष्टकर्म का नाश हो, प्रकट होंय गुण आठ।**
मुक्ति वधु को प्राप्त कर, होवें ऊँचे ठाठङ्क

ॐ ह्रीं अष्टकर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 9॥

तृतीय वलय

दोहा- **कर्म निर्जरा बन्ध का, कारण होता ध्यान।**
अशुभ छोड़ शुभ ध्यान से, होय विशद कल्याणङ्क

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्‌मावती माँ के नन्दनङ्क
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वाननङ्क
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करोङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं॥

16 ध्यान सम्बन्धी अर्घ्य

आर्त्तध्यान होने लगता है, हो जाये यदि इष्ट वियोग।
जिसके कारण बढ़े जीव को, जन्म जरा मृत्यु का रोगङ्क

आर्त्तध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगानङ्क

ॐ ह्रीं इष्ट वियोगज आर्त्तध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 1॥

हो अनिष्ट संयोग यदि तो, होने लगता आर्त्तध्यान।
जागृत होता है क्लेश फिर, उसको रहे न निज का ज्ञानङ्क
आर्त्तध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगानङ्क

ॐ ह्रीं अनिष्ट संयोग आर्त्तध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ 2॥

रोगादि के कारण कोई, तन में पीड़ा होय महान्।
पीड़ा चिन्तन ध्यान होय तब, ऐसा कहते हैं भगवानङ्क
आर्त्तध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगानङ्क

ॐ ह्रीं पीड़ा चिन्तन आर्त्तध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 3॥

आगामी भोगों की वाञ्छा, जग में करता जो इंसान।
तप के फल से चाहे यदि तो, जैनागम में कहा निदानङ्क
आर्त्तध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगानङ्क

ॐ ह्रीं निदान आर्त्तध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 4॥

जिनके हैं परिणाम क्रूर अति, हिंसा में माने आनन्द।
रौद्र ध्यान का प्रथम भेद यह, कहलाता है हिंसानन्दङ्क

रौद्र ध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगानङ्क

ॐ ह्रीं हिंसानन्द रौद्रध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 5॥

झूठ बोलकर खुश होता जो, मृषानन्द वह ध्यान रहा।
कर्म बन्ध दुर्गति का कारण, जैनागम में यही कहाङ्क
रौद्र ध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगानङ्क

ॐ ह्रीं मृषानन्द रौद्रध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 6॥

मालिक की आज्ञा बिन वस्तु, लेना चोरी रहा सदैव।
चोरी कर आनन्द मनाना, चौर्यानन्द ध्यान है एवङ्क
रौद्र ध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगानङ्क

ॐ ह्रीं चौर्यानन्द रौद्रध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति॥ 7॥

मूर्छाभाव को कहा परिग्रह, परिग्रह पा खुश हों जो लोग।
परिग्रहानन्द ध्यान का उनको, होता है भाई संयोगङ्क
रौद्र ध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगानङ्क

ॐ ह्रीं परिग्रहानन्द रौद्रध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति॥ 8॥

शिरोधार्य जिन आज्ञा करते, भाव सहित जग में जो लोग।
चिन्तन में जो लीन रहें नित, आज्ञा विचय ध्यान के योगङ्क

धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भव सागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वासङ्क

ॐ ह्रीं आज्ञा विचय धर्मध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 9॥

जो संसार देह भोगों के, चिन्तन में रहते लवलीन।
वह हैं अपाय विचय के धारी, आत्म ध्यान में रहते लीनङ्क
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भव सागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वासङ्क

ॐ ह्रीं अपाय विचय धर्मध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 10॥

अपने कृत कारित के फल को, स्वयं भोगते कर्म संयोग।
ऐसा चिन्तन ध्यान करें जो, विपाक विचयधारी वह लोगङ्क
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास।

ॐ ह्रीं विपाक विचय धर्मध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 11॥

तीन लोक का क्या स्वरूप है, उसमें जो भी है आकार।
होता है संस्थान विचय से, ध्यान लोक का कई प्रकारङ्क
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास।

ॐ ह्रीं संस्थान विचय धर्मध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 12॥

पृथक द्रव्य गुण पर्यायों का, शब्दों का जो करते ध्यान।
पृथक्त्व वितर्क वीचार ध्यान है, ऐसा कहते हैं भगवानङ्क

शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वासङ्क

ॐ ह्रीं पृथक्त्ववितर्कवीचार शुक्लध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥ 13॥

श्रुतज्ञान के अवलम्बन से, चिन्तन करते हैं जो लोग।
एक द्रव्य पर्याय योग का, एकत्व वितर्क ध्यान के योगङ्क
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वासङ्क

ॐ ह्रीं एकत्व वितर्क शुक्लध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 14॥

क्रिया सूक्ष्म हो जाती तन की, प्रकट होय जब केवल ज्ञान।
निज आतम में होय लीनता, सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती ध्यानङ्क
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वासङ्क

ॐ ह्रीं सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाती शुक्लध्यान सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 15॥

क्रिया योग तन की रुकते ही, होते आतम में लवलीन।
व्युपरत क्रिया निवृत्ति ध्यानी, रहते निज चेतन में लीनङ्क
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वासङ्क

ॐ ह्रीं व्युपरत क्रिया निवृत्ति शुक्लध्यान सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥16॥

दोहा – अशुभ ध्यान से बंध हो, बढ़े नित्य संसार।
मुक्ति हो शुभ ध्यान से, मिले मुक्ति का सार ङ्क

ॐ ह्रीं षोडश प्रकार शुभाशुभ ध्यान रहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय

दोहा – अविरत योग प्रमाद अरु, मिथ्या तथा कषाय।
आस्रव के हैं द्वार यह, बत्तिस कहे जिनायङ्क

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दनङ्क
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वाननङ्क
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करोङ्क

ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं

32 प्रकार आस्रव विनाशक जिन के अर्घ्य

जो विपरीत मार्ग में श्रद्धा, प्राणी जग के धारे।
मिथ्यादृष्टि प्राणी जग में, होते हैं वह सारेङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं विपरीत मिथ्यात्व विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 1॥

अनेकान्तिक वस्तु को जो, ऐकान्तिक ही माने।
मिथ्यामतवादी इस जग में, एक रूप पहचानेङ्क

सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं एकान्त मिथ्यात्व विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 2॥

जो सराग अरु वीतराग जिन, देव शास्त्र गुरु पावें।
विनय मिथ्वात्व धारने वाले, एक समान बतावेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं विनय मिथ्यात्व विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 3॥

देवशास्त्र गुरुवर तत्वों में, जो संशय को धारे।
संशय मिथ्यावादी हैं वह, जग के प्राणी सारेङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं संशय मिथ्यात्व विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 4॥

हित अरु अहित को जान सके न, ज्ञान हीन संसारी।
मिथ्याज्ञानी कहे जगत में, तीनों लोक दुखारीङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं अज्ञान मिथ्यात्व विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 5॥

दयाहीन हिंसा करते जो, अविरत हिंसा कारी।
दीन हीन अज्ञानी हैं वह, भ्रमत फिरे संसारीङ्क

सम्यक् चारित के द्वारा, प्रभु आठों कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं हिंसाविरति विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 6॥

सत्य वचन को छोड़ जगत में, असत् वचन को धारे।
हैं असत्य अविरत के धारी, जग के प्राणी सारेङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं असत्याविरति विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 7॥

भूली बिसरी पड़ी गिरी जो, वस्तु लेवे कोई।
अविरत चौर्य धारने वाला, कहलावे वह सोईङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं चौर्याविरति विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 8॥

जो चित्राम देव नर पशु की, नारी लख ललचावे।
वह कुशील अविरत का धारी, भोगी बहु दुःख पावेङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं कुशीलाविरति विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 9॥

बाह्याभ्यन्तर कहा परिग्रह, उसमें प्रीति लगावें।
परिग्रह अविरति का धारी वह, दुर्गति के दुःख पावेंङ्क

सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं परिग्रहाविरति विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 10॥

स्पर्शन के अष्ट विषय हैं, उनमें प्रीति लगावें।
अविरति के द्वारा कर्मों का, आश्रव करते जावेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं स्पर्शन इन्द्रिय विषय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 11॥

विषय पंच रसना इन्द्रिय के, उनमें प्रीति लगावें।
अविरत रहकर के कर्मों का, आश्रव करते जावेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं रसना इन्द्रिय विषय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 12॥

घ्राणेन्द्रिय के विषय कहे दो उनमें प्रीति लगावें।
अविरत रहकर के कर्मों का, आश्रव करते जावेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय विषय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 13॥

विषय पंच चक्षु इन्द्रिय के, उनमें प्रीति लगावें।
कर्मास्त्रव करते हैं भारी, वह अव्रति कहलावेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं चक्षु इन्द्रिय विषय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 14॥

कर्णेन्द्रिय के विषय सात हैं, उनमें प्रीति लगावें।
कर्मास्त्रव करते हैं भारी, वह अव्रति कहलावेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय विषय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 15॥

कषाय अनंतानुबंधी से, मिथ्याभाव बनावें।
काल अनन्त भ्रमण जग में कर, दुःख अनेकों पावेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 16॥

अप्रत्याख्यान कषायोदय में, अणुव्रत न धर पावें।
अविरत रहकर के कर्मों का आस्त्रव करते जावेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 17॥

प्रत्याख्यान कषायोदय से, देशव्रती रह जावें।
महाव्रतों के भाव कभी न, उनके मन में आवेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 18॥

उदय संज्वलन का होवे तो, यथाख्यात न पावें।
कर्म निर्जरा पूर्ण होय, न केवल ज्ञान जगावेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं संज्वलन कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 19॥

स्त्री की चर्चा में कोई, मन को यदि लगावे।
वह प्रमाद के द्वारा नित प्रति, आस्त्रव करता जावेङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं स्त्री कथा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा॥ 20॥

कोई चोर चोरी की चर्चा, करके मन बहलावे।
धन की वाञ्छा करने वाला, कर्मास्त्रव को पावेङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं चोर कथा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 21॥

भोजन की चर्चा से मन में, रति भाव जो आवें।
भोज्य कथा करने वाले नित, पापास्त्रव को पावेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं भोजन कथा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 22॥

राजनीति राजा की चर्चा, करके जो सुख पावें।
आत्मध्यान को तजने वाले, खोटे कर्म कमावेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं राज कथा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 23॥

जो प्रमाद करके निद्रा में, अपना समय गमावें।
कर्म का आश्रव करने वाले, दुर्गति में ही जावेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं निद्रा प्रमाद विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 24॥

स्त्री, पुत्र, मित्र आदि से, जो स्नेह लगावें।
कर्माश्रव करने वाले वह, परभव कष्ट उठावेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं प्रणय (स्नेह) विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 25॥

क्रोध करें औरों को मारें, ईर्ष्या भाव जगावें।
आत्मघात कर लेय स्वयं ही, नरकों में वह जावेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं क्रोध कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 26॥

मानी मान करें जीवों में, खोटे कर्म कमावें।
नीचा माने औरों को वह, निज को उच्च बतावेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं मान कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 27॥

ठगें और को छल छद्रम से, मायाचारी प्राणी।
पशुगति के दुःख भोगें वह, कहती यह जिनवाणीङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं माया कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 28॥

लुब्ध दत्त सम लोभ करें कई, जग में लोभी प्राणी।
जोड़-जोड़ धन कर्म बाँधते, कहती है जिनवाणीङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं लोभ कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 29॥

मन चंचल चित् चोर कहा है, सब जग में भटकावे।
विषयों की अभिलाषा करके, उनमें ही अटकावेङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं मन योग विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 30॥

वचन बड़े अनमोल कहे हैं, उर में घाव बनावें।
हितमित प्रिय वाणी जीवों को, मल्हम सी बन जावेंङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं वचन योग विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 31॥

काया की माया विचित्र है, जग में नाच नचावे।
कर्मास्त्रव का कारण है, जो नाना रूप बनावेङ्क
सम्यक् चारित के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशेङ्क

ॐ ह्रीं काय योग विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 32॥

दोहा– **जिनवर ने बत्तिस कहे, आश्रव के यह द्वार।**
कर्मास्त्रव को रोध कर, पाऊँ भव से पारङ्क

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत् आश्रव द्वार विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 33॥

पञ्चम वलय

दोहा– **छियालिस गुण जिन देव के, समवशरण सुखकार।**
क्षायिक पाये लब्धियां, जग में मंगलकारङ्क

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दनङ्क
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वानन्ङ्क
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करोङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं॥

1 जन्म के अतिशय (ताटंक-छंद)

जन्म से अतिशय पाते जिनवर, उनके गुण को गाता हूँ।
स्वेद रहित निर्मल तन पाए, तिन पद अर्घ्य चढ़ाता हूँङ्क
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क1ङ्क

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहित मूत्र मल से तन सुन्दर, अतिशयकारी पाते हैं।
तीर्थंकर के पुण्य का फल यह, तिन पद अर्घ्य चढ़ाते हैंङ्क
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क2ङ्क

ॐ ह्रीं नीहार रहित सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समचतुस्त्र संस्थान प्रभु का, हीनाधिक नहिं पाते हैं।
आंगोपांग रहें ज्यों के त्यों, तिन पद अर्घ्य चढ़ाते हैंङ्क
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क3ङ्क

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्रवृषभ नाराच संहनन, सर्वोत्तम प्रभु पाते हैं।
प्रबल पुण्य से तीर्थंकर के, इन्द्र चरण झुक जाते हैंङ्क
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क4ङ्क

ॐ ह्रीं वज्रवृषभ नाराचसंहनन सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥।

प्रभु का सुरभित और सुगंधित, उज्जवल पावन तन पाते।
सर्व लोक के प्राणी फीके, प्रभु के आगे पड़ जातेङ्क
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क5ङ्क

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप महा अतिशय सुंदर है, सौम्य रूपता पाते हैं।
सुंदरता में कामदेव, चक्री फीके पड़ जाते हैंङ्क
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क6ङ्क

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक हजार आठ लक्षण शुभ, प्रभु के तन में होते हैं।
दर्शन करने वाले प्राणी, अपनी जड़ता खोते हैंङ्क

जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क7ङ्क

ॐ ह्रीं 1008 लक्षण सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्त सुउज्ज्वल धवल देह में, तीर्थंकर जिन पाते हैं।
प्रभु की प्रभुता सुनकर प्राणी, अति विस्मय कर जाते हैंङ्क
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क8ङ्क

ॐ ह्रीं श्वेत रहित सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित-मित प्रिय मनहर वाणी शुभ, श्री जिनेन्द्र की खिरती है।
भव्य जीव जो सुनने वाले, उनके मन को हरती हैङ्क
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क9ङ्क

ॐ ह्रीं हितमित प्रियवचन सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बलशाली अतिशय अनंत शुभ, देह सुसुंदर पाते हैं।
सुर नर जिन के प्रबल पुण्य से, चरणों में झुक जाते हैंङ्क
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीष झुकाते हैंङ्क1ङ्क

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञान के 1 अतिशय

सौ योजन दुर्भिक्ष न होवे, जहां प्रभु का आसन हो।
पापी कामी चोर न बहरे, जहां प्रभु का शासन होङ्क
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंङ्क11ङ्क

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय गमन आकाश प्रभु का, यह अतिशय दिखलाते हैं।
नृत्यगान करते हैं सुर नर, मन में अति हर्षाते हैंङ्क
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंङ्क12ङ्क

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व प्राणियों के मन में शुभ, दया भाव आ जाता है।
प्रभु के आने से अदया का, नाम स्वयं खो जाता है ङ्क
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंङ्क13ङ्क

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर पशु कृत और अचेतन, कोई उपसर्ग नहीं होवें।
महिमा है तीर्थंकर पद की, आप स्वयं सारे खोवेंङ्क
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंङ्क14ङ्क

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग से पीड़ित है जग, बिन आहार नहीं रहते।
क्षुधा वेदना को जीते प्रभु, कवलाहार नहीं करतेङ्क
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंङ्क15ङ्क

ॐ ह्रीं कवलाहाराभाव घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण के बीच विराजे, पूर्व दिशा सम्मुख होवें।
चतुर्दिशा में दर्शन हो शुभ, भव्य जीव जड़ता खोवेंङ्क

केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंङ्क16ङ्क

ॐ ह्रीं चर्तुमुखत्व घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सब विद्या के ईश्वर हैं प्रभु, सर्व लोक के अधीपती।
सुर नरेन्द्र चरणों आ झुकते, गणधर मुनिवर और यतीङ्क
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंङ्क17ङ्क

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

छाया रहित प्रभु का तन है, कैसा विस्मयकारी है।
मूर्त पुद्गलों से निर्मित है, सुन्दर अरू मनहारी हैङ्क
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंङ्क18ङ्क

ॐ ह्रीं छाया रहित घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा

बढ़े नहीं नख केश प्रभु के, ज्यों के त्यों ही रहते हैं।
तीर्थंकर जिन जिनवाणी में, तीन काल यह कहते हैंङ्क
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंङ्क19ङ्क

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निर्निमेष दृग रहते जिनके, नहीं झपकते पलक कभी।
नाशादृष्टी रहे सदा ही, ऐसा कहते देव सभीङ्क
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतु, पद में शीष झुकाते हैंङ्क2ङ्क

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

14 XodH$SV A{Ve`

अर्धमागधी भाषा प्रभु की, सब जीवों को सुखकारी।
ॐकार युत जिनवाणी है, मंगलमय मंगलकारीङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क 21ङ्क

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मैत्रीभाव सभी जीवों में, प्रभु के आने से होवें।
रोष तोष क्रोधादि कषाएँ, आपो आप स्वयं खोवेंङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क22ङ्क

ॐ ह्रीं सर्व मैत्रीभाव देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

छहों ऋतु के फूल खिलें अरु, सर्वऋतु के फल लगते।
होय आगमन जहाँ प्रभु का, भाग्य सभी के भी जगतेङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क23ङ्क

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भूमि चमकती है दर्पण सम, जहाँ प्रभु का होय गमन।
श्री जिनवर प्रभुता दिखलाएँ, जग के प्राणी करें नमनङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क24ङ्क

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमारत्नमही देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुरभित मंद पवन हितकारी, सब जीवों के मन को भाय।
यह अतिशय जिनवर का पावन, जैनागम में कहा जिनायङ्क

समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क25ङ्क

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्व दिशाओं के प्राणी सब, आनंदित हो जाते हैं।
समवशरण से सहित प्रभु के, चरण कमल पड़ जाते हैंङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क26ङ्क

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कंटक रहित भूमि हो जावे, जहां प्रभु के चरण पड़ें।
प्रभु की भक्ति करने वाले, के मन में आनंद बढ़ेंङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क27ङ्क

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित घूलि कंटकादि देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

होवे जय जयकार गगन में, सभी जीव हों सुखकारी।
नर सुरेन्द्र अति हर्ष मनाएँ, नृत्य करें मंगलकारीङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क28ङ्क

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि पावन, देव करें अतिशयकारी।
दर्शन करके श्री जिनवर का, खुश हों सारे नर नारीङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क29ङ्क

ॐ ह्रीं मेघ कुमार कृत गंधोदकवृष्टि देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गगन गमन के समय देवगण, पद तल कमल रचाते हैं।
तीर्थंकर के समवशरण में, यह अतिशय दिखलाते हैंङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क3ङ्क

ॐ ह्रीं चरण कमलतल रचित स्वर्णकमल देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु आगमन हो जाने से, निर्मल हो जावे आकाश।
धर्म भावना का लोगों के, मन में होवे पूर्ण विकासङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क31ङ्क

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गमन देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्व दिशाएँ धूम रहित हों, श्री जिनवर के आने से।
कर्म कटें जो लगे पुराने, भाव सहित गुण गाने सेङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क32ङ्क

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

धर्मचक्र आगे चलता है, जिन महिमा को दिखलाए।
रहे मूक फिर भी इस जग में, श्री जिनेन्द्र के गुण गाएङ्क
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क33ङ्क

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मंगल द्रव्य अष्ट लेकर के, प्रभु चरणों में आते हैं।
भक्ति वश हो नृत्य गानकर, प्रभु के गुण वह गाते हैंङ्क

समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीष झुकाते हैंङ्क34ङ्क

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

8 प्रातिहार्य

(गीतिका–छंद)

प्रातिहार्य अशोक तरु शुभ, पाए तीर्थंकर प्रभो!।
मोक्ष मंजिल के किनारे, पर खड़े रहते विभो! ङ्क
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत् मंगल गाए हैंङ्क35ङ्क

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रत्न से मण्डित सिंहासन, आपका शुभ है प्रभो!।
हे त्रिलोकीनाथ! मंगल, आप हो जग में विभो! ङ्क
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत् मंगल गाए हैंङ्क36ङ्क

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रातिहार्य त्रय छत्र शुभ भी, पाए तीर्थंकर प्रभो!।
हे त्रिलोकीनाथ ! मंगल, आप हो जग में विभो!ङ्क
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत् मंगल गाए हैंङ्क37ङ्क

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभा मण्डल युक्त भामण्डल, सहित हो हे प्रभो!।
सूर्य फीका पड़ रहा है, आपके आगे विभो!ङ्क

कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत् मंगल गाए हैंङ्क38ङ्क

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य पावन, पाए तीर्थंकर प्रभो!।
भव्य प्राणी श्रवण करके, ज्ञान पाते हे विभो!ङ्क
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत् मंगल गाए हैंङ्क39ङ्क

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पुष्पवृष्टि देव करते, गगन में खुश हो प्रभो!।
वंदना करते चरण की, हर्षमय होकर विभो!ङ्क
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत् मंगल गाए हैंङ्क4ङ्क

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दुंदुभि बाजे सुमंगल, ध्वनि से बजते प्रभो!।
जगत् में महिमा दिखाते, आपकी जिनवर विभो!ङ्क
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत् मंगल गाए हैंङ्क41ङ्क

ॐ ह्रीं देव दुंदुभि सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चंवर चौसठ यक्ष ढौरें, भक्तियुत होकर विभो!।
शिखर से झरना गिरे ज्यों, दिखे मनहर हे प्रभो! ङ्क
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत् मंगल गाए हैंङ्क42ङ्क

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि चामर सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

4 अनंत चतुष्टय

दर्श गुण के आवरण का, नाश करके हे विभो!।
दर्श पाए अनंत पावन, सर्व दृष्टा हे प्रभो!ङ्क
कर्मघाती नाशकर प्रभु, अनंत चतुष्टय पाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत मंगल गाए हैंङ्क43ङ्क

ॐ ह्रीं अनंत दर्शन गुण प्राप्त शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म नाशा, आपने हे जिन प्रभो!।
हो गये सर्वज्ञ जिनवर, अनंत ज्ञानी हे विभो!ङ्क
कर्मघाती नाशकर प्रभु, अनंत चतुष्टय पाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत मंगल गाए हैंङ्क44ङ्क

ॐ ह्रीं अनंत ज्ञान गुण प्राप्त शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्मनाशी मोह के, सम्यक्त्व गुण पाए विभो!।
सुख अनंतानंत पाए, तब जिनेश्वर हो प्रभो!ङ्क
कर्मघाती नाशकर प्रभु, अनंत चतुष्टय पाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत मंगल गाए हैंङ्क45ङ्क

ॐ ह्रीं अनंत सुख गुण प्राप्त शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अंतराय विनाश करके, वीर्य प्रगटाए प्रभो!।
बल अनंतानंत पाए, तब जिनेश्वर हो विभो!ङ्क
कर्मघाती नाशकर प्रभु, अनंत चतुष्टय पाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभु के गुण, जगत मंगल गाए हैंङ्क46ङ्क

ॐ ह्रीं अनंत वीर्य गुण प्राप्त शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समोशरण के अर्घ्य

समवशरण की चारों दिश में, मानस्तम्भ बनें हैं चार।
चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजित, शोभित होते अपरम्पारङ्क

जिन दर्शन कर श्रद्धा जागे, जीवों का होवे कल्याण।
दर्श आपका होय निरन्तर, हमको दो ऐसा वरदानङ्क47ङ्क

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित चतुर्दिग मानस्तंभ सहित शनि अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चैत्य प्रसाद भूमि के मंदिर, का हम करते हैं गुणगान।
रोग शोक दारिद्र कलह के, नाशक जग में रहे महान्ङ्क
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क48ङ्क

ॐ ह्रीं चैत्य प्रासाद भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वितिय भूमि रही खातिका, समवशरण में मंगलकार।
जलचर जीवों से पूरित है, पुष्प पुञ्ज हैं अपरम्पारङ्क
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क49ङ्क

ॐ ह्रीं खातिका भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

लता भूमि अतिशय कारी शुभ, पुष्प जलाशय शुभ मनहार।
चारों ओर लताऐं फैलीं, सुन्दर मनहर कई प्रकारङ्क
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क5ङ्क

ॐ ह्रीं लता भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चैत्यवृक्ष शोभित होते हैं, उपवन भूमि में सुखकार।
तरु अशोक लख चतुर्दिशा में, प्रमुदित होते हैं नर-नारङ्क
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क51ङ्क

ॐ ह्रीं उपवन भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दश प्रकार चिन्हों से चिन्हित, ध्वज फहराएँ चारों ओर।
भवि जीवों के मन मधुकर को, कर देती हैं भाव विभोरङ्क
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क52ङ्क

ॐ ह्रीं ध्वज भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कल्पवृक्ष भूमि है षष्ठी, तरु सिद्धार्थ रहे चउँ ओर।
सिद्ध बिम्ब शोभित हैं उन पर, करते सबको भाव विभोरङ्क
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क53ङ्क

ॐ ह्रीं कल्पवृक्ष भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भवन भूमि सुन्दर सुर परिकर, सहित मनोहर मंगलकार।
नवस्तूप सहित चऊदिश में, क्रीड़ा में रत हैं सुखकार।
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क54ङ्क

ॐ ह्रीं भवन भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रीमण्डप भूमि है अनुपम, द्वादश कोठे सहित महान्।
दिव्य ध्वनि सुनते जिनवर की, बैठ सभी अपने स्थानङ्क
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क55ङ्क

ॐ ह्रीं श्रीमण्डप भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गंध कुटी के ऊपर श्रीजिन, कमलासन पर अधर रहे।
दिव्यदेशना की शुभ गंगा, प्रभु के द्वारा नित्य बहेङ्क

समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क56ङ्क

ॐ ह्रीं समवशरण गंधकुटि ऊपर स्थित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनिसुव्रत के समवशरण में, गणधर अष्टादश गुणवान।
चौंसठ ऋद्धी के धारी शुभ, मल्लि गणधर रहे प्रधानङ्क
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क57ङ्क

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित अष्टादश गणधर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पंच शतक मुनिराज पूर्वधर, मुनिसुव्रत के चरण शरण।
वन्दन करके भक्तिभाव से, करते जो नित कर्म शमनङ्क
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क58ङ्क

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित पंच शतक मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

थे इक्कीस हजार मुनीश्वर, शिक्षक पद के अधिकारी।
रत्नत्रय को पाने वाले, निर्विकारमय अविकारीङ्क
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क59ङ्क

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित एकविंशति शिक्षक पद धारीमुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

एक सहस्त्र आठ सौ मुनिवर, केवल ज्ञान के अधिकारी।
कर्म घातिया नाश किए हैं, सर्व जगत मंगलकारीङ्क
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क6ङ्क

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित अष्टादश शतक केवलज्ञानी मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

एक सहस्त्र आठ सौ मुनिवर, अवधिज्ञान के अधिकारी।
दर्शन ज्ञान चरित तप साधक, शोभित थे मंगलकारीङ्क
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क61ङ्क

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित अष्टादश शतक अवधिज्ञानी मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वय सहस्त्र द्वय शतक मुनीश्वर, विक्रिया ऋद्धि के धारी।
ज्ञानी ध्यानी हित उपदेशी, मोक्ष महल के अधिकारीङ्क
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क62ङ्क

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित द्वाविंशतिशत विक्रिया ऋद्धिधारी मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पन्द्रह सौ मनः पर्यय ज्ञानी, विपुल मति को धार रहे।
वीतराग मय जैन धर्म ध्वज, अपने हाथ सम्हार रहेङ्क
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क63ङ्क

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित पंचादश शत विपुलमति मनः पर्ययज्ञान धारी मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वादश शत् वादी मुनिवर शुभ, वाद कुशल जग हितकारी।
जैन धर्म के हित सम्पादक, करुणाकर करुणाधारीङ्क
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क64ङ्क

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित द्वादशशत वादी मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौतिस अतिशय प्रातिहार्य शुभ, अनन्त चतुष्टय मंगलकार।
पावन समवशरण की रचना, अष्ट विधि मुनिवर अविकारङ्क
समवशरण में प्रभु विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दनङ्क65ङ्क

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित षट्चत्वारिंशत मूलगुण सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– **मुनिसुव्रत जग में हुये, तीन लोक के नाथ।**
पूजा करके भाव से, विशद झुकाते माथङ्क

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य : **ॐ ह्रीं क्रों ह्रः श्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः सर्व शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।**

समुच्चय जयमाला

दोहा– **तीन लोक में श्रेष्ठ हैं, मुनिसुव्रत जिनराज।**
जयमाला कर पूजते, प्रभु द्वय पद हम आजङ्क
मुनिसुव्रत भगवान का, जपूँ निरन्तर नाम।
शनि अरिष्ट ग्रह शांत हो, चरणों विशद प्रणामङ्क

(चौपाई छन्द)

तीर्थंकर पदवी जो धारे, वे ही जिनवर रहे हमारे।
जिनने कर्म घातिया नाशे, आतम ज्ञान ध्यान जो भासेङ्क
वे ही जग मंगल कहलाए, इन्द्रों ने जिन के गुण गाए।
उत्तम सर्व लोक में गाए, जिनके पद वन्दन को आएङ्क
चार शरण जग में कहलाई, प्रथम शरण जिनवर की भाई।
पूर्व पुण्य का फल यह गाया, तीर्थंकर पदवी को पायाङ्क

देव रत्न वृष्टि करते हैं, जिन भक्ति में रत रहते हैं।
जन्म समय ऐरावत लाते, पाण्डुक शिला पे न्हवन करातेङ्क
आनन्दोत्सव खूब मनाते, भक्ति में वह नचते गाते।
बालक की परिचर्या करते, सब बाधाएँ उनकी हरतेङ्क
जब प्रभु जी संयम को धरते, लौकान्तिक अनुमोदन करते।
लेकर देव पालकी आते, उस पर प्रभु जी को बैठातेङ्क
मानव प्रभु को लेकर जाते, वन्दन हेतु शीष झुकाते।
देव पालकी ले उड़ जाते, प्रभु को जंगल में पहुँचातेङ्क
केश लुंच करते हैं जाकर, पंच मुष्ठि की सीमा पाकर।
निज आतम का ध्यान लगाते, प्रभु जी केवल ज्ञान जगातेङ्क
समोशरण की रचना होती, भवि जीवों के कल्मष खोती।
देवों की बलिहारी जानो, भक्ति में तत्पर पहिचानोङ्क
योग निरोध प्रभु ने कीन्हा, निज की आतम में चित् दीन्हा।
प्रभु सभी कर्मों को नाशे, सिद्ध शिला पर किए निवासेङ्क
श्री जिनेन्द्र हो गये अविकारी, महिमा गाते हैं नर नारी।
जिस पदवी को प्रभु ने पाया, वह पाने का भाव बनायाङ्क
चरण शरण में सेवक आयो, श्रद्धा सुमन साथ में लायो।
''विशद'' भावना हम यह भावें, भव सागर से मुक्ति पावेंङ्क

दोहा– मोक्ष महल में वास हो, यही भावना एक।
चरण वन्दना मैं करूँ, अपना माथा टेकङ्क

ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– ब्रह्मा तुम विष्णु तुम्हीं, तुम ही शिव के नाथ।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, जोड़ रहे द्वय हाथङ्क

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् इत्याशीर्वाद

मुनिसुव्रत जिनराज की आरती

तर्ज:– तेरी पूजन को भगवान.....

श्री मुनिसुव्रत भगवान, आज हम द्वारे आये हैं।
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैंङ्क

मुनिव्रतों को तुमने पाया, वीतरागमय भेष बनाया।
कीन्हा आतम ध्यान, आपके द्वारे आए हैंङ्क
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए है।
श्री मुनिसुव्रत ....ङ्क

तुमने कर्म घातिया नाशे, निज में केवलज्ञान प्रकाशे।
प्रभु किया जगत् कल्याण, आपके दर्शन पाए हैंङ्क
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।
श्री मुनिसुव्रत ....ङ्क

मुक्ति वधु के तुम भरतारी, सर्व जगत में मंगलकारी।
तुम हो कृपा सिन्धु भगवान, चरण हम शीष झुकाए हैंङ्क
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।
श्री मुनिसुव्रत ....ङ्क

तव चरणों में जो भी आया, उसने ही सौभाग्य जगाया।
जग में केवल आप महान्, दर्श कर हम हर्षाए हैंङ्क
आरती करने को हे नाथ !!, जलाकर दीपक लाए हैं।
श्री मुनिसुव्रत ....ङ्क

हम भी शरण तुम्हारी आए, भक्ति भाव से प्रभु गुण गाए।
हो 'विशद' सर्व कल्याण, चरण में हम सिरनाए हैंङ्क
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।
श्री मुनिसुव्रत ....ङ्क

मुनिसुव्रत चालीसा

अरहंतों को नमन् कर, सिद्धों का धर ध्यान।
उपाध्याय आचार्य अरु, सर्व साधु गुणवान।।
जैन धर्म आगम 'विशद', चैत्यालय जिनदेव।
मुनिसुव्रत जिनराज को, वंदन करूँ सदैव।।

मुनिसुव्रत जिनराज हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे।
प्रभु हैं वीतरागता धारी, तीन लोक में करुणा कारी।।
भाव सहित उनके गुण गाते, चरण कमल में शीष झुकाते।
जय जय जय छियालिस गुणधारी, भविजन के तुम हो हितकारी।।
देवों के भी देव कहाते, सुरनर पशु तुमरे गुण गाते।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, सारे जग के आप हि त्राता।।
प्रभु तुम भेष दिगम्बर धारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।
क्रोध मान माया के नाशी, तुम हो केवलज्ञान प्रकाशी।।
प्रभु की प्रतिमा कितनी सुंदर, दृष्टि सुखद जमीं नाशा पर।
खड्गासन से ध्यान लगाया, तुमने केवलज्ञान जगाया।।
मध्यलोक पृथ्वी का मानो, उसमें जम्बूद्वीप सुहानो।
अंग देश उसमें कहलाए, राजगृहि नगरी मन भाए।।
भूपति वहाँ सुमित्र कहाए, माता पदमा के उर आए।
यादव वंश आपने पाया, कश्यप गोत्र वीर ने गाया।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आये, गर्भ दोज सावन शुदि पाए।
वहाँ पे सुर बालाएँ आईं, माँ की सेवा करें सुभाई।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, जन्म राजगृह नगरी पाया।
इन्द्र सभी मन में हर्षाए, ऐरावत ले द्वारे आये।।
पांडुकशिला अभिषेक कराया, जन-जन का तव मन हर्षाया।
पग में कछुआ चिह्न दिखाया, मुनिसुव्रत जी नाम कहाया।।
जन्म से तीन ज्ञान के धारी, क्रीड़ा करते सुखमय भारी।
बल विक्रम वैभव को पाए, जग में दीनानाथ कहाए।।

बीस धनुष तन की ऊँचाई, तन का रंग कृष्ण था भाई।
कई वर्षों तक राज्य चलाया, सर्व प्रजा को सुखी बनाया।।
उल्का पतन प्रभू ने देखा, चिंतन किए द्वादश अनुप्रेक्षा।
सुर लौकान्तिक स्वर्ग से आए, प्रभु के मन वैराग्य जगाए।।
देव पालकी अपराजित लाए, उसमें प्रभु जी को पधराए।
भूपति कई प्रभु को ले चाले, देवों ने की स्वयं हवाले।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, नील सु वन चंपक तरु पाया।
मुनिव्रतों को तुमने पाया, प्रभु ने सार्थक नाम बनाया।।
पंचमुष्टि से केश उखाड़े, आकर देव सामने ठाड़े।
केश क्षीर सागर ले चाले, भक्तिभाव से उसमें डाले।।
वेला के उपवास जो धारे, तीजे दिन राजगृही पधारे।
वृषभसेन पड़गाहन कीन्हा, खीर का शुभ आहार जो दीन्हा।।
वैशाख कृष्ण नौमी दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
देव सभी दर्शन को आए, समवशरण सुंदर बनवाए।।
गणधर प्रभु अठारह पाए, उनमें प्रमुख सुप्रभ कहलाए।
तीस हजार मुनि संग आए, समवशरण में शोभा पाए।।
इकलख श्रावक भी आए भाई, तीन लाख श्राविकाएँ आईं।
संख्यातक पशु वहाँ आए, असंख्यात सुर गण भी आये।।
प्रभु सम्मेद शिखर को आए, खड्गासन से ध्यान लगाए।
पूर्व दिशा में दृष्टि पाए, निर्जर कूट से मोक्ष सिधाए।।
फाल्गुन वदी वारस दिन जानो, श्रवण नक्षत्र मोक्ष का मानो।
प्रदोष काल में मोक्ष सिधाये, मुनि अनेक सह मुक्ति पाये।।
शनि अरिष्ट गृह जिन्हें सताए, मुनिसुव्रत जी शांति दिलाएँ।
इह पर भव के सुख हम पाएँ, मुक्तिवधु को हम पा जाएँ।।

दोहा- पाठ करें चालीस दिन, नित चालीसों बार।
मुनिसुव्रत के चरण में, खेय सुगंध अपार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, योग्य होय संतान।
दीन दरिद्री होय जो, 'विशद' होय धनवान।।

प्रशस्ति

मध्यलोक के मध्य है, जम्बूद्वीप महान्।
भारत देश का प्रान्त है, सुन्दर राजस्थानङ्क
जिला एक अजमेर है, जग में है विख्यात।
नगर अयोध्या की शुभम्, रचना होवे ज्ञातङ्क
सोनी जी परिवार ने, किया अनोखा काम।
अद्वितीय रचना बनी, हुआ विश्व में नामङ्क
दो हजार सन् सात का, हुआ है वर्षायोग।
इस अवसर पर ही बना, लिखने का संयोगङ्क
मुनिसुव्रत भगवान की, भक्ति फले अविराम।
पर्यूषण के पूर्व ही, पूर्ण हुआ यह कामङ्क
भादव शुक्ला पञ्चमी, उत्तम क्षमा महान्।
मुनिसुव्रत की भक्ति में, लिक्खा विशद विधानङ्क
शुभ भावों के हेतु यह, किया प्रभु गुणगान।
भव्य जीव पढ़कर इसे, पावें सम्यक् ज्ञानङ्क
पूजा करके भाव से, करें कर्म का नाश।
रत्नत्रय को प्राप्त कर, पावें ज्ञान प्रकाशङ्क
शनि अरिष्ट नाशक लिखा, मंगलमयी विधान।
भूल चूक को टाल कर, पढ़ें सभी श्रीमानङ्क
कवि नहीं वक्ता नहीं, मैं हूँ लघु आचार्य।
'विशद' धर्म युत आचरण, करें जगत् जन आर्यङ्क
पूजा के फल से सभी, होते कर्म विनाश।
सर्व कर्म का नाश हो, होवे आत्म प्रकाशङ्क

परम पूज्य आचार्य
श्री 18 विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करने से, हृदय कमल खिल जाते हैंङ्क
गुरु आराध्य हम आराधक, करते है उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंङ्क

विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि.स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंस होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंङ्क
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंङ्क
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आयें हैंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि.स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्य नि.स्वाहा।

जयमाला

दोहा - **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेङ्क
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क

पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, गुरु बने आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वाद (पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

ब्र. आस्था दीदी

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर